बंक सप्त रस दृष्ट है, दर्शन मन अभिलाष |

पूर्ण लोक मन्मथ रटण, कुंज सदन निज बास ||

श्याम वरण गिरिवरधरण, गोपीजन चित्तचोर |

व्रजराजकुंवर जिय में बसो, सुंदर नंदकिशोर ||

श्रीगोवर्धनवासी सांवरेलाल तुम बिन रह्यो न जाय,

व्रजराज लडंते लाडिले हो . तुम बिन रह्यो न जाय ||

बंक चिते मुसकाय के लाल, सुंदर वदन दिखाय |

लोचन तलफे मीन ज्यों लाल, पल छिन कल्प विहाय हो ||

सप्तक स्वर बंधान सो लाल, मोहन वेणु बजाय |

सुरत सुहाई बांधिके नेंक मधुर मधुर स्वर गाय हो ||

रसिक रसीली बोलनी लाल, गिरि चढ़ गैया बुलाय |

गंग बुलाई धूमरी नेंक ऊंचि टेर सुनाय हो ||

दृष्टि परी जा दिवस ते लाल , तब ते रुचे नहीं आन |

रजनी नींद न आवही मोहे विसर्यो भोजन पान हो ||

दर्शन को नैना तपे लाल, बचन सुनन को कान |

मिलवे को हियरो तपे मेरे जिय के जीवन प्राण हो ||

मन अभिलाषा व्है रही लाल, लगत न नयन निमेष |

ईक टक देखुं आवतो प्यारो , नागर नटवर भेख हो ||

पूरण शशि मुख देख के लाल चित्त चोट्यो वाही ठोर |

रूप सुधा रस पान के लाल सादर चंद्र चकोर हो ||

लोक लाज कुल वेद की लाल छांड्यो सकल विवेक |

कमल कलि रवि ज्यों बढे लाल, क्षण क्षण प्रीत विशेष हो ||

मन्मथ कोटिक वारने लाल देखत डगमगी चाल |

युवती जन मन फंदना लाल, अंबुज नयन विशाल हो ||

यह रट लागी लाडिले लाल, जैसे चातक मोर |

प्रेम नीर बरखा करो लाल, नव घन नंदकिशोर हो ||

कुंज भवन क्रीडा करो लाल सुखनिधि मदनगोपाल |

हम श्री वृंदावन मालती तुम भोगी भ्रमर भूपाल हो ||

युग युग अविचल राखिये लाल, यह सुख शैल निवास |

श्री गोवर्धनधर रूप पे बल जाय चतुर्भुजदास हो ||

यह मेरे अभिलाष है, पूरो श्रीनंदकुमार |

छबि पर कोटिक वारने लाल, तन मन प्राण आधार ||

कहा कहुं रसना एक है, नहीं लक्ष करोड़ |

कैसै करके बरनवुं, दास सदा कर जोड़ ||

_-------------_-------------------------------